nwda.gov.in

परती भूमि की पलटी काया, तीन मीटर बढ़ा भू जलस्तर

जितेंद्र शर्मा • नई दिल्ली

ग्रामीण विकास मंत्रालय की आकलन रिपोर्ट से साफ है कि प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की वाटरशेड परियोजना से परती भूमि की काया पलट रही है। लगभग सभी राज्यों में परियोजना स्थल की भूमि और उसके आसपास लगभग तीन मीटर तक भू जलस्तर में वृद्धि हुई है। परती भूमि के क्षेत्रों में भूगर्भ जलस्तर में बढ़ोतरी इस लिहाज से अहम है कि बढ़ती आबादी के बीच कृषि योग्य भूमि का प्रबंधन बड़ी चुनौती है। मोदी सरकार द्वारा शुरू किए गए प्रयासों के सकारात्मक परिणाम नजर आने लगे हैं।

इंटीग्रेटेड वाटरशेड मैनेजमेंट प्रोग्राम तो वर्ष 2008-09 में शुरू हुआ था, लेकिन तब अलग-अलग विभागों में तालमेल का अभाव था। केंद्र सरकार ने 2015 में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना शुरू की। इसमें जलशक्ति, कृषि और ग्रामीण विकास मंत्रालय की अलग-अलग भूमिका तय की गई। इनमें वाटरशेड परियोजना का जिम्मा ग्रामीण विकास मंत्रालय ने संभाला, जो कि खास तौर पर राज्यों की परती भूमि चिह्नित कर वहां जल संचयन के लिए था।

केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री गिरिराज सिंह ने बताया कि मंत्रालय के भूमि संसाधन विभाग ने 28 राज्यों के 656 जिलों की दो करोड़ 95 लाख हेक्टेयर परती भूमि को चिह्नित कर इस परियोजना में शामिल किया। वहां चेक डैम, ट्रेंच, तालाब आदि बनाकर जल संचयन किया गया। राज्यों की रिपोर्ट के अनुसार, सभी परियोजना स्थलों के आसपास औसतन तीन मीटर तक भू-जलस्तर बढ़ा है। भूमि प्रबंधन विभाग के संयुक्त सचिव नितिन खाड़े ने बताया कि वाटरशेड परियोजना के तहत कुल 6,382 प्रोजेक्ट शामिल किए गए। कुल 7.64 लाख ढांचे बनाए गए, जिनसे जल संचयन किया गया।

राज्यों के प्रस्ताव पर इन मानकों पर चिह्नित की परती भूमि

- सूखे की घटना की बारंबारता।
- भूजल संसाधनों के अत्यधिक दोहन से पेयजल की भारी कमी।
- अवक्रमित भूमि या बंजर भूमि की अधिकता।
- सामान्यीकृत अंतर वानस्पतिक सूचकांक में गिरावट।
- मृदा के स्वास्थ्य की स्थिति।
- जिला या राज्य औसत की तुलना में प्रमुख फसलों की कम उत्पादकता।

वाटरशेड परियोजना से भूमि प्रबंधन, अर्जित हुई 16.41 लाख हेक्टेयर की अतिरिक्त सिंचाई क्षमता

1901 के बाद से अब तक का सबसे सूखा महीना रहा अगस्त

नई दिल्ली, आइएएनएस : मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार भारत में 1901 के बाद से इस वर्ष अगस्त के सबसे अधिक सूखा रहने का अनुमान है और यह स्पष्ट रूप से अल नीनो स्थितियों के तीव्र होने का नतीजा है। वरिष्ठ मौसम विज्ञानियों का कहना है कि इस साल का मानसून 2015 के बाद से सबसे अधिक शुष्क हो सकता है, जिसमें 13 प्रतिशत वर्षा की कमी दर्ज की गई है। अगस्त में अब तक 32 प्रतिशत वर्षा कम हुई।